चित्र पुस्तकों द्वारा बच्चों में कलात्मक रुझान विकसित करना

– कमलेश चंद्र जोशी

शिक्षकों के साथ काम में यह भी अनुभव रहा है कि जहां बच्चों को चित्र बनाने के मौके मिलते है वहां बच्चों को लिखने में भी आसानी हो जाती है।

स्कूल पुस्तकालय की चित्रों से सजी पुस्तकें बच्चों में पढ़ने की उत्सुकता विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन किताबों के चित्र जहां पाठय को कल्पनात्मक विस्तार देते हैं वहीं सौंदर्यबोध भी विकसित करते हैं। बच्चों के पढ़ने के शुरुआती दौर में अनुमान लगाकर पढ़ने में मदद भी करते हैं। प्राथमिक शालाओं में स्कूल पुस्तकालय संचालित करने का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है– बच्चों को उत्साही पाठक बनाना। पाठक बनने का मतलब है कि बच्चे पढ़ने के साथ चित्रों का भी आनंद लें। उनमें चित्रों के प्रति सौंदर्यबोध विकसित हो। इसके लिए स्कूल के पुस्तकालय में एक शिक्षक या पुस्तकालय संचालक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है कि वह बच्चों के साथ किताबों का उपयोग करते हुए इन दोनों ही पहलुओं पर बराबर से ध्यान रखें।

अक्सर स्कूलों में देखने को मिलता है कि बच्चों को किताबें पढ़ने को दी जाती हैं लेकिन चित्रों को गौर से देखने और उन पर बातचीत पर तो बहुत ही कम ध्यान दिया जाता है। यह बात कहीं विद्यालयों में कला शिक्षण से भी जुड़ती है। स्कूलों में कला भी हाशिए का ही विषय है इस पर बहुत सोच–समझकर काम नहीं होता। यह केवल बच्चों से कुछ परंपरागत चित्र बनवाने तक ही सीमित रहता है। इस संदर्भ में यह लगता है कि बच्चों को चित्र बनाने व चित्रों को देखने में चित्रात्मक पुस्तकें महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती हैं। इन किताबों के द्वरा बच्चों से चित्रों पर बात करते हुए चित्रों की बारीकियों में जा सकते हैं। इसके माध्यम से बच्चों को विभिन्न प्रकार के चित्रों को देखने मौका भी मिलता है और फिर उसे उनके चित्रों में भी देखा जा सकता है। बच्चों के भाषा विकास को ध्यान में रखते हुए सर्वप्रथम शिक्षकों के साथ प्रशिक्षण कार्यक्रमों में हमने स्कूल में पुस्तकालय स्थापित करने और बच्चों को किताबें पढ़ने के अवसर देने की बात की। उनसे यह भी चर्चा की गई कि स्कूल में केवल किताबें आ जाने से हमारा उद्देश्य पूरा नहीं हो जाता। इसके लिए आवश्यक होगा कि हम बच्चों को नियमित रूप से किताबें पढ़ने के मौके दें और उनमें किताबों के प्रति रुचि बनाने के लिए उन्हें खुद भी किताबें पढ़कर सुनाएं। किताबों व उनके चित्रों पर बातचीत करें, उन्हें अनुमान लगाने, स्वतंत्र रूप से चित्र बनाने और लिखने के भी मौके दें। इस प्रकार बच्चों के पढ़ने, लिखने, चित्र बनाने को साथ–साथ चलने वाली

प्रक्रियाओं के रूप में देखें। इन प्रक्रियाओं में बच्चों के भाषायी कौशलों के विकास के साथ कला की प्रक्रियाएं भी शामिल हैं और इन्हें एक समग्रता में देखने का प्रयास करें। बच्चों में किताबों के चित्रों के प्रति रुझान बनाने के लिए जरूरी है कि बच्चों के साथ किताब पढ़ते हुए उनका ध्यान चित्रों की ओर भी दिलाया जाए जैसे – उन्हें चित्र कैसा लग रहा? चित्र में क्या–क्या है? इसमें और क्या–क्या बना हुआ है? यहां पर यह छोटा सा क्या दिखाई पड़ रहा है? यह लड़की क्या सोच रही है? यह लड़का पहले बड़ा खुश था अब कैसा दिख रहा है? बजरबट्टू पहले कितना खुश दिखाई दे रहा था? अब कितना उदास दिखाई दे रहा? हाथी का पानी पीने के बाद कितना पेट फूल गया है? यह चित्र में देखो। किताब के कौन से चित्र अच्छे लगे? और क्यों? आदि तरीके से बच्चों का चित्र की तरफ ध्यान आकर्षित किया जा सकता है। आगे चौथी–पांचवी कक्षाओं में हम एक चित्रकार की रचित विभिन्न किताबों के चित्रों देख सकते हैं और उन पर बातचीत कर सकते हैं।

चित्र पुस्तकों के माध्यम से बच्चों में कला के प्रति रुचि बढ़ती है और इन किताबों के चित्र बच्चों को उनकी स्मृतियों व कल्पनाओं में ले जाते हैं जैसे कि छोटे बच्चों के साथ नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित किताब 'रेलगाड़ी चले छुक–छुक' नामक किताब पर जब बात की जाती है तो बच्चों की रेलगाड़ी से की गई यात्रा से जुड़ी यादें ताजा हो जाती हैं। इसमें चाहे गांव का बच्चा हो या शहर का बच्चा। चाहे मजदूर का बच्चा हो या किसी कर्मचारी का। चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किताब 'अम्मा सबकी प्यारी अम्मा 'किताब के चित्रों को देखकर बच्चों को अपने पशु–पक्षी पालने का अनुभव याद आ ही जाता है। यहां शिक्षक का काम होता है वह उसे बच्चों के बीच कैसे लाता है? इस किताब में उसके मुख्य पात्र रवि की अलग–अलग छवियां हैं। उसमें रवि के खुश होने, रवि के गुस्से में आने, रवि को गिलहरी से ध्यान से देखने व रात, दिन के समय के सुंदर फ्रेम हैं। इस पर बच्चों से बात होती है कि रवि अभी कैसा दिख रहा है? अब यह क्या करेगा? अब कैसा दिख रहा है, यह कौन सा समय है ? आदि।

इन सब जगहों पर बच्चों का ध्यान दिलाना पड़ता है। इसी तरह छोटे बच्चों के लिए एकलव्य द्वारा प्रकाशित किताब 'बिल्ली के बच्चे' में भी बिल्ली के बच्चों की बहुत छवियां दिखाई पड़ती हैं और इसके माध्यम से बच्चों का ध्यान कहानी बढ़ाने में किया जाता है और बच्चे इससे जुड़ते भी हैं। बच्चों को किताबों के चित्र दिखाने उन पर बातचीत करने से कहीं उनमें यह समझ बन रही होती है ये चित्र किस तरह फोटो या विज्ञापन के चित्र से अलग है। इनमें कोई भाव भी हैं, चित्र कुछ कह रहा हैं ये बातें समझ में आती हैं और कहीं यह अपने आसपास की चीजों, पर्यावरण के प्रति अच्छे होने का अहसास भी दिलाती हैं जैसे कि– 'पहाड़ जिसे एक चिड़िया से प्यार हुआ' किताब को पढ़ते हुए हम अपने आसपास के पक्षियों, पहाड़, परिवेश के प्रति संवेदनशीलता का भाव महसूस करते हैं। किताबों के चित्र बच्चों की स्मृतियों को भी जगाते हैं वहीं कल्पना को उड़ान देते हैं। बच्चों में जागरूकता व संवेदनशीलता का भाव भी जगाते हैं। चिल्ड्रेन्स बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित किताबों 'महागिरी' व 'प्यासी मैना' के चित्र देखते हुए भी यही काम होता है। यहां यह समझना जरुरी है किताबों को पढ़ने–पढ़ाने की प्रक्रिया में शिक्षक के द्वारा बच्चों का चित्रों पर ध्यान दिलाना, उस पर बात करना भी शामिल है।

इसका हमें ध्यान रखना चाहिए, वरन् होता यह है कि बच्चे किताब तो पढ़ लेते हैं लेकिन चित्रों पर इतना ध्यान नहीं देते। हम इस बात का भी अवलोकन कर सकते हैं कि जो बच्चे किताब पढ़ रहे होते हैं उनका ध्यान पाठय में ही रहता है। वे चित्रों पर इतना ध्यान नहीं देते। उन्हें बोलना होता है आप चित्र भी देखो और नीचे पढ़ो। यह काम शिक्षक या पुस्तकालय संचालक को करना चाहिए। इस प्रकार हम देखते हैं किताबों के चित्र बच्चों की स्मृतियों को जगाते हैं वहीं कल्पना को उड़ान देते हैं। बच्चों में जागरूकता व संवेदनशीलता का भाव भी जगाते हैं। बच्चों से किताबों पर चर्चा के उपरांत यह गतिविधि अच्छी रहती है इस कहानी के आधार पर अपने मन से चित्र बनाओ। इसमें यह देखने को मिलता कि बच्चे तरह–तरह के चित्र बनाते हैं और किताब से जुड़ा अपना अनुभव भी लिखते है।

वहीं कुछ स्कूलों में जहां बच्चों का अभी किताबों से गहरा रिश्ता नहीं बना है उनका चित्र बनाने का अनुभव भी नहीं होता तो वे कहते हैं हम चित्र नहीं बना पाएंगे हमने नहीं बनाया है तो बच्चों से बात करनी पड़ती है तब वे भी कोशिश करते है। इसके अंतर्गत कुछ किताब से देखकर भी चित्र बनाने की कोशिश करते हैं, कुछ किताब से चित्र छापने की कोशिश भी करते हैं। इस प्रक्रिया में कभी कोई बच्चा कहेगा – चिड़िया नहीं बन रही, गाय का मुंह नहीं बन रहा। इस संदर्भ में एक अनुभव याद आता है। एक स्कूल में कक्षा 2 के बच्चों को 'बिल्ली के बच्चे' नामक

किताब सुनाई जा रही थी। इसमें बच्चों को चित्रों के आधार पर अनुमान लगाने व अपने अनुभव बताने की बात तो पहले की गई। उनका ध्यान चित्रों की तरफ दिलाया गया। बच्चों को किताब पढ़ाने के बाद किताब पर चर्चा भी हुई और उनसे कहा गया–अभी हमने किताब में बिल्ली के बच्चों के तरह–तरह के चित्र देखे जिसमें बच्चे आटे के डिब्बे में घुसे हुए हैं, मेंढक के पीछे भाग रहे हैं, मछली पकड़ने के लिए तालाब में कूद पड़े हैं आदि। अब इन चित्रों को सोचते हुए तुम भी एक चित्र बनाओ। कुछ बच्चे कहने लगे हम नहीं बना पाएंगे। फिर बात हुई कि कोशिश तो करो, बन जाएगा। तब बच्चों ने प्रयास किया और आखिर में देखने को मिला बच्चों ने इतनी तरह के बिल्ली के बच्चों के रंग – बिरंगे चित्र बनाए थे कि साथ बैठे शिक्षक को भी आश्चर्य हुआ। इन चित्रों में सभी बच्चों की बिल्लियां अलग–अलग तरह की थीं। किसी चित्र में बिल्ली के बच्चे मोटे थे, किसी के चित्र में पतले थे, किसी में छोटे थे। बच्चों ने इसमें तरह–तरह के रंग भी भरे थे। इन चित्रों पर शिक्षक से भी बात हुई – देखिए, बच्चे अभी कह रहे थे कि हम नहीं बना पाएंगे और इन्होंने इतने विविधता पूर्ण चित्र बनाए हैं।

यहां बच्चों को मौके देने की बात है और उनकी कल्पनाशीलता को समझने की बात है। इसी तरह एक अन्य विद्यालय में भी बच्चों के साथ 'हाथी की हिचकी' नामक किताब पर बात करते हुए ऐसा ही अनुभव रहा बच्चों ने इस पुस्तक में हाथी के विभिन्न भावों को देखा और बाद में बच्चों ने हाथी के रंग–बिरंगे चित्र बनाए और उस पर कुछ पंक्तियां भी लिखीं। स्कूल पुस्तकालय में काम करते हुए यह भी लगा कुछ अच्छे चित्रों से सजी किताबें भी बच्चों को चित्र बनाने की प्रेरणा भी देती है। एक स्कूल में बच्चों को तूलिका द्वारा प्रकाशित बढ़िया किताब 'पहाड़ जिसे चिड़िया से प्यार हुआ' नामक किताब बच्चों को पढ़कर सुनाई गई। इस किताब को सुनने–पढ़ने और इसके चित्रों को देखने में बच्चों ने बहुत रुचि ली। कक्षा के चार–पांच बच्चे तो अपना मिड डे मील जल्दी से पूरा करके आ गए और एक चार्ट पर उन्होंने एक बढ़िया सी दृश्यावली के साथ चिड़िया का चित्र बनाया पर उस पर बड़ी एकाग्रता से रंग भी भरे। इस तरह से यह समझने को मिला कई किताबें बच्चों को चित्र बनाने की प्रेरणा खुद ही दे देती हैं।

बच्चों के चित्र बनाने पर शिक्षकों से बात करेंगे तो शिक्षक यह तो कहते हैं कि बच्चे चित्र बनाते हैं लेकिन उनका इस बात से जुड़ाव नहीं बन पाता चित्र बनाना बच्चों की अभिव्यक्ति से कैसे जुड़ा है? बच्चों के चित्र बनाने से उनमें किन क्षमताओं का विकास हो रहा है? यह आगे बच्चों के लेखन से कैसे जुड़ा है? यह बच्चों के भाषा विकास और कला से कैसे जुड़ा हुआ है? इनका आकलन कैसे किया जाए? आदि। सबसे महत्वपूर्ण बात यह भी पाठयक्रम का ही हिस्सा है।

उक्त संदर्भ में एक स्कूल भ्रमण का एक और उदाहरण ध्यान में आ रहा है। वहां कक्षा पांच के बच्चों को कथा संस्था द्वारा प्रकाशित 'एक बजरबट्टू का गीत' नामक किताब पढ़ के सुनाने की योजना बनाई गई। इस किताब में कहानी के साथ बहुत सुंदर चित्र हैं। किताब सुनाने से पूर्व शिक्षिका कह रहीं थी – "इनमें से कुछ बच्चों को पढ़ना नहीं आता। आप इनके लिए भी कुछ करिए। "कक्षा में यह देखने को मिला वे बच्चे पीछे बैठे हुए थे तो सबसे पहले उन बच्चों को आगे बैठाया गया और यह कहा गया हम लोग किताब पर जो भी बात करेंगे उनमें सबसे पहले आगे बैठे हुए बच्चे अपनी बात रखेंगे। बाकी बच्चे बाद में बोलेंगे। इस प्रक्रिया में यह देखने को मिला ये बच्चे भी किताब पर बातचीत में अच्छे से अपनी बात रख रहे थे और अनुमान लगाकर बता रहे थे। इस किताब में बजरबट्टू के विभिन्न भावों के माध्यम से बच्चों से यह भी बात की गई कि बजरबट्टू क्या सोच रहा है ? अभी कैसा दिख रहा है ? अब कितना खुश है फिर आगे यह कितना उदास हो गया है ?

इसके बाद बच्चों से यह भी बात हुई कि अभी हमने किताब में सुंदर चित्र देखे हैं। अब ऐसा करते हैं कि हम भी इस कहानी के आधार पर अपने मन से चित्र बनाते हैं। यहां भी कुछ बच्चे किताब मांगने लगे क्योंकि उन्हें पहले से स्वतंत्र चित्र बनाने का मौका नहीं मिला था। कुछ बच्चों को किताब देखने को दे दी और वे एक समूह में बैठकर चित्र बनाने लगे। कुछ बच्चे अपने मन से भी चित्र बना रहे थे। शिक्षिका से बात हुई। आपने देखा किताब सुनाने में ये बच्चे भी अच्छे से रिस्पांस कर रहे हैं और चित्र बनाने में भी अच्छे से जुड़े और बीच–बीच में किताब पढ़ने की कोशिश करते रहे। शिक्षिका कहने लगी– यह तो बच्चे कर लेते हैं लेकिन अभी पढ़ नहीं पाते। मैंने कहा–बच्चों के साथ किताब पर अच्छे से बात करना, उनका चित्र बनाना और उनका लिखना सब एक साथ जुड़ा हुआ। इस प्रक्रिया में वे पढ़ना भी सीखेंगे। हमें इन सब बातों को एक समग्रता में देखना होगा और उनके लिए एक अर्थपूर्ण संदर्भ बनाना होगा तो बच्चे पढ़ना सीखेंगे। अभी शिक्षिका केवल पढ़ने को एक टुकड़े में ही

देख पा रहीं थी और उसी के अनुसार सोच रही थीं। उनका चित्रों पर बहुत ध्यान नहीं था।

बच्चों के बनाए चित्रों को जब हम देखते हैं तो यहां यह समझने का प्रयास करना चाहिए कि एक बच्चे ने अपने चित्र को किस तरह ग्रहण किया है। चित्र में कितना डिटेल है। वह चित्र बनाने में कितना ध्यान लगाए हुए है। कौन–कौन से रंग भरे है। आदि यह सब बच्चों के चित्र बनाने की प्रक्रिया में देखा जा सकता है और इसको लेकर बच्चों से बातचीत की जा सकती है।

अमूमन होता यह है कि बच्चों से चित्र तो बनवा लिए जाते हैं और उन्हें अच्छा कहकर रख दिया जाता है। उन्हें ध्यान से देखा नहीं जाता कि बच्चे और बेहतर कैसे बनाएं ? इस पर उनसे बात नहीं होती। बच्चों में चित्रों के प्रति रुझान बनाने के लिए बच्चों से इस बात पर चर्चा करना अच्छा होता है – किताब में आपको कौन से चित्र अच्छे लगे। उसके बारे में बताओ। इसमें क्या बात अच्छी लगी ?

बाल पुस्तकों के चित्रों को देखते हुए बच्चे दूसरी संस्कृतियों से भी जुड़ते हैं। एकलव्य द्वारा प्रकाशित 'गाँव का बच्चा' किताब पढ़ते हुए बच्चे अफ्रीकी जन जीवन को करीब से देख पाते हैं। उनके पहनावे, रहन–सहन, गाँव–बाजार आदि से जुड़ते हैं। इस पर बच्चों से बात भी होती है। तूलिका द्वारा प्रकाशित 'इस्मत की ईद' नामक किताब के चित्रों को देखते बच्चे इस्लामिक संस्कृति से जुड़ते हैं और उनके पहनावे, खान–पान के प्रति संवेदनशील होते हैं। तूलिका द्वारा प्रकाशित 'जू की कहानी' की छवियां बच्चों को केरल के परिवेश से जोड़ती हैं और वहीं तूलिका द्वारा ही प्रकाशित 'क्यूं क्यूं लड़की' के चित्रों को देखते हुए बच्चे झारखंड के जनजातीय क्षेत्र से जुड़ते हैं। इस किताब के मुखपृष्ठ मोइना के अपने कंधे पर नेवले लटकाए चित्र पर उनमें किताब पढ़ने की उत्सुकता जगाता है। इस प्रकार यह देखने में आता है इन किताबों के चित्र व कहानियां बच्चों को विभिन्न संस्कृतियों के प्रति संवेदनशील बनाते हैं। यह साहित्य और कला का उद्देश्य है।

चित्रों की विविधता से परिचित कराने के लिए बच्चों को विभिन्न किताबों की चित्र शैलियों को दिखा सकते हैं और उस पर बात कर सकते हैं जैसे कि लोककथाओं की किताबों में किस तरह के चित्र हैं? 'सो जा उल्लू' में किस तरह का चित्र है, 'छुटकू उड़ चला में' किस तरह का चित्र है? 'कजरी गाय .. 'श्रृंखला की किताबों में किस तरह के चित्र हैं? इसी तरह हम एक चित्रकार की चित्र शैली को समझने के लिए उसके द्वरा चित्रांकित विभिन्न किताबों को भी देख सकते हैं जैसे– जगदीश जोशी, अतनु राय, पुलक विश्वास के बनाए चित्र किस तरह के हैं? प्रोइती राय या दुर्गाबाई के बनाए चित्र कैसे हैं? आदि।

यह भी देखने को मिलता है कि शुरुआत में बच्चे चित्र बनाने के दौरान किताब से चित्र छापने की कोशिश भी करते हैं। इसके लिए वे किताब मांग लेते हैं। यहां शिक्षक द्वारा उन्हें मदद करने की जरूरत पड़ती है परंतु मौका देने से धीरे–धीरे वे चित्र बनाना सीख भी जाते हैं लेकिन यहां यह देखना होता है कि हम बच्चों के चित्रों को कैसे देखते हैं? अगर बच्चों के चित्रों में हम बहुत स्पष्टता, सुडौलता देखेंगे तो बात नहीं बनेगी। यहां यह समझना होगा बच्चों ने चित्र को किस तरह पर्सीव किया है? उसके चित्र में कल्पनाशीलता कहां दिखाई पड़ रही है? इस साथ ही हमें बच्चों की उम्र के अनुसार उनके चित्रों के विकास को भी समझने की जरूरत पड़ेगी।

शिक्षकों के साथ काम में यह भी अनुभव रहा कि जहां बच्चों को चित्र बनाने के मौके मिलते है। वहां बच्चों को लिखने में भी आसानी हो जाती है। एक कार्यशाला में यह बात उभरी कि बच्चों को लिखने की शुरूआत में उनसे– गोला बनवाओ, आधा गोला बनाओ, आड़ी–तिरछी लाईन बनवाओ आदि की बात एक शिक्षक कह रहे थे। इस बात पर आगे यह बात हुई जब हम बच्चों को किताब सुनाते हैं और चित्र बनाने का मौका देते हैं तो बच्चे आगे चलकर धीरे–धीरे अक्षर बनाना भी सीख जाते हैं। अपना नाम भी लिखते हैं और बाद में चित्र में क्या बनाया है उसे भी लिखते हैं। इस प्रकार इस प्रक्रिया में बच्चे लिखना भी सीखते हैं।

इन किताबों पर काम करते हुए अनुभवों से सबसे महत्वपूर्ण बात यह उभरकर आती है कि स्कूल में शिक्षक साथी भी इन किताबों व चित्रों की अहमियत समझें और इसे बच्चों के भाषा व कला के विकास से जोड़कर देख पाएं। इस पर समझ बनाने की जरूरत है। इसमें सबसे पहला काम यह होगा वे इन किताबों को पढ़ने तथा उनके चित्रों को देखने की आदत डालें।

अंत में हमें लगता है कि बच्चों की चित्रों के प्रति कैसे उत्सुकता जगाई जाए यह हमें भी सीखना चाहिए। इसके लिए हमारा भी चित्रात्मक पुस्तकों व कला के प्रति रुझान होना चाहिए।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन उधमसिंह नगर से जुड़े हैं)